Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 8 | ISSUE : 10 | OCTOBER 2022

नगरीकरण एवं नगरीय समस्याएं: जहानाबाद नगर का एक भौगोलिक अवलोकन

निभा सिन्हा [1] | विद्याशंकर [2]

[1] शोधार्थी, भूगोल विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

[1] सहायक प्रोफेसर, भूगोल विभाग, बी.जी.एन. कॉलेज, जमुहार

ABSTRACT:

KEYWORDS:

परिचय

किसी देश या प्रदेश की जनसंख्या से आशय उद्देश्य प्रदेश की सीमा में एक निश्चित समय पर निवासी कुल जनसंख्या से होता है जबकि नगरीय जनसंख्या से आशय एक निश्चित समय पर नगरीय अधिवास में निवासी जनसंख्या से होता है। स्पष्ट है कि देश की कुल जनसंख्या में ग्रामीण और नगर यह दोनों प्रकार की जनसंख्या निवास करती है। अनेक अनेक कारणों से जब ग्रामीण जनसंख्या नगरीय जनसंख्या में परिवर्तित होती है तो इस बदलाव की प्रक्रिया को नगरीकरण कहा जाता है। अन्य शब्दों में प्राथमिक कार्यों में संलग्न है जनसंख्या जब अपना व्यवसाय बदल कर गैर प्राथमिक कार्य में संलग्न होकर नगरीय अधिवास ओं में जा बसती है तो जनसंख्या के इस रूपांतरण आवास और पैसे में बदलाव को नगरीकरण कहा जाता है। अतः नगरीकरण एक प्रक्रिया है जो नकुल दशाओं में ग्रामीण जनसंख्या को नगरीय जनसंख्या में परिवर्तित करती है। नगरीकरण की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए ग्रिफिथ टेलर ने कहा है कि नगरीकरण गांव के निवासीत जनसंख्या का स्थानांतरित होकर नगरों में बसने की प्रक्रिया को कहते हैं। इस अवधारणा को विकसित करते हुए किंग्सले डेविस ने प्रतिपादित किया है कि नगरीकरण से आशय कुल जनसंख्या में से नगरों में निवासीत जनसंख्या के अनुपात तथा उसकी वृध्दि से है। अपनी बातों को और अधिक स्पष्ट करते हुए उन्होंने यह भी कहा है कि नगरीकरण सामाजिक जीवन का संपूर्ण प्रारूप में क्रांतिकारी परिवर्तन की ओर संकेत करता है जो स्वयं में एक आधारभूत आर्थिक प्रतिक्रिया और तकनीकी विकास का प्रतिफल है जो एक बार शुरू हो जाने के बाद गतिमान रहता है।

स्पष्ट है कि नगरीकरण की अवधारणा किसी देश या प्रदेश की जनसंख्या में मात्र ग्रामीण नगरीय परिवर्तन तक सीमित नहीं है अपितु दोनों प्रकार की जनसंख्या ग्रामीण और नगरीय में विभेद का भी द्योतक है अर्थात इसके अभाव के कारण दोनों प्रकार जीवन मूल्यों में काफी अंतर देखने को मिलता है। व्यापक अर्थ में नगरीकरण मात्र जनांकिकीय पक्ष तक सीमित ना होकर आर्थिक सामाजिक और स्थानिक बदलाव की प्रक्रिया है जो एक ही देश की जनसंख्या के नगरीकरण और उसके प्रभाव के कारण काफी बदलाव आ जाता है।

नगरीकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए लंपर्ड ने प्रतिपादित किया है कि नगरीकरण प्रक्रिया में 3 तरह के विचार सन्निहित है– पहला व्यापार जनित दूसरा व्यवसाय जनित और तीसरा जननांकिकीय। पहले पक्ष के अनुसार नगरीकरण की प्रक्रिया में व्यक्तिगत आदतों में बदलाव आता है और नागरिकता व्यक्ति पर हावी हो जाती है। दूसरे पक्ष के अनुसार व्यक्ति के पेशा में परिवर्तन आता है और वह तब तक क्रियाशील रहता है जब तक उसका पेशा प्राप्त नहीं हो जाता है। तीसरे पक्ष के अनुसार नगर की जनसंख्या में बढ़ोतरी होते रहती है चाहे वह प्रकृतिक वृद्धि हो या आव्रजन से। इस प्रकार नगरीकरण की प्रक्रिया एक प्रकार से सतत बृद्धिमान परिवर्तन की प्रक्रिया है जो एक बार शुरू होने के बाद जल्दी रुकती नहीं है।

अतः नगरीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत ग्रामीण और नगरीय जनसंख्या का अनुपात बदलता रहता है। इस बदलाव से उत्पन्न अनुपातिक संबंध को सम्मानित प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है जो किसी देश या प्रदेश के नगरीकरण के स्तर को व्यक्त करता है। जनसंख्या के अनुपात में यह बदलाव सम्मानित नगरीय जनसंख्या के पक्ष में अर्थात धनात्मक होता है क्योंकि नगर एक साथ है जनसंख्या का धारा और चुंबक के गुणों से संपन्न होता है। ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन करती जनसंख्या जहां गांव को गुजारती है वही नगरों को बोझिल बनाती है और स्वभाव होता है नगरीकरण से सतर्क धनात्मक बदलाव अंकित करती हैं लेकिन बदलाव का स्तर हमेशा सम्मान नहीं होता है। यह भी उल्लेखनीय है कि सामान्यतः नगरीकरण की प्रक्रिया में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर कुल प्रदेशिक जनसंख्या की वृद्धि दर से अधिक होती है। अतर नगरीकरण और नगरीय वृद्धि संबंधित प्रक्रियाएं हैं। नगरिया वृद्धि कुल जनसंख्या वृद्धि का कार्य और कारक दोनों है अर्थात नगरिया उपाध्य कुल जनसंख्या वृद्धि पर आधारित होता है और इसके कारण कुल जनसंख्या की वृद्धि भी हो जाती है। अतः ग्रामीण और नगरीय जनसंख्या के अनुपात परस्पर संबंधित कार्य होते हैं। नगरीकरण की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि एवं क्रमबद्ध विधि का प्रतिफल है जिससे निम्न रूप में व्यक्त किया जा सकता है।

सामान्यतः सभी देशों और प्रदेशों में नगरीकरण की दर समान नहीं पाई जाती है, साथ ही समय के संदर्भ में इसमें अंतर भी पाया जाता है। विश्व के कुछ देशों में नगरीकरण की दर बहुत अधिक देखने को मिलती है जबकि कुछ देशों में अति धीमी दर पाई जाती है। इसी प्रकार कुछ क्षेत्रों में किसी अवधि में तीव्र गति होती है तो कभी मंद।

उद्देश्य

वर्तमान समय में जहानाबाद नगर का नगरीकरण एवं इससे होने वाले नगरीय समस्याओं के बारे में अवगत कराना है जिससे भविष्य में इस समस्या के निवारण के लिए प्रयास किया जा सके। क्योंकि प्रारंभ से ही लोगों का गांवों से शहरों की ओर पलायन हो रहा है जिसका मुख्य कारण शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार तथा मनोरंजन है और इन सभी के कारण जो विस्फोटक जनसंख्या शहरों में अधिवास हो रहा है तो साथ में पर्यावरण प्रदूषण, आवासीय समस्या, गमना गमन की समस्या, नागरिक सेवाओं एवं सुविधाओं की कमी, अनियोजित भूमि उपयोग, जलापूर्ति, सफाई एवं कूड़ा निष्पादन की समस्या, जल निकासी की समस्या और खुली भूमि की कमी की समस्या आमतौर पर देखने को मिलती है। यदि इन समस्याओं पर बल दिया जाए तो भविष्य में इसके निवारण के लिए सफल कदम उठाए जा सकते हैं।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध योजना के उद्देश्य एवं परिकल्पना के अवलोकन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जहानाबाद नगर के वार्डो को इकाई मानकर शोध कार्य किया गया है। विस्तृत अध्ययन के लिए नमूना सर्वेक्षण, आकड़े सगह के लिए प्रश्नावली (जहानाबाद नगर में कार्य करने वाले लोगो से पूछताछ कर उनके अधिवास तथा आसपास की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है) तथा कई प्रकार के आंकड़े सरकारी कार्यालयों द्वारा प्राप्त किया गया है। संग्रहित आंकड़ों को तालिका रेखाचित्र एवं मानचित्र के माध्यम से प्रदर्शित एवं व्याख्यित किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

जहानाबाद – मुगलकालीन शहर जहांआराबाद का ही परिवर्तित नाम है। जहानाबाद जिले का गठन 1 अगस्त 1986 ई को गया जिले से अलग करके किया गया था। वर्तमान में यह जिला मगध प्रमंडल का हिस्सा है। यह जिला दरधा और यमुना नदी

के संगम पर स्थित है। इस का कुल क्षेत्रफल 931 वर्ग किलोमीटर है जिस पर लगभग 11 लाख 25 हजार की आबादी निवास करती है। जिसकी जनसंख्या घनत्व 1209 व्यक्ति है। जहानाबाद जिले की सीमाएं उत्तर में पटना, दक्षिण में गया, पूर्व में नालंदा तथा पश्चिम में अरवल जिला से लगती है। इस जिले की अक्षांश एवं देशांतर स्थिति $25^0$0' से $25^0$15' उत्तर तथा $84^0$31'से $85^0$15' पूर्व तक है। जहानाबाद जिले में कुल सात प्रखंड तथा 93 पंचायतें हैं। कुल 7 प्रखंडों में से एकमात्र प्रखंड जहानाबाद ही है जहां नगरीकरण देखने को मिलता है। जहानाबाद शहर नगर परिषद के अंतर्गत आता है जिसमें कुल 33 वार्ड हैं और आबादी 103202 है जिसमें 54710 पुरुष तथा 48492 महिलाएं हैं।

अवस्थितिकी मानचित्र

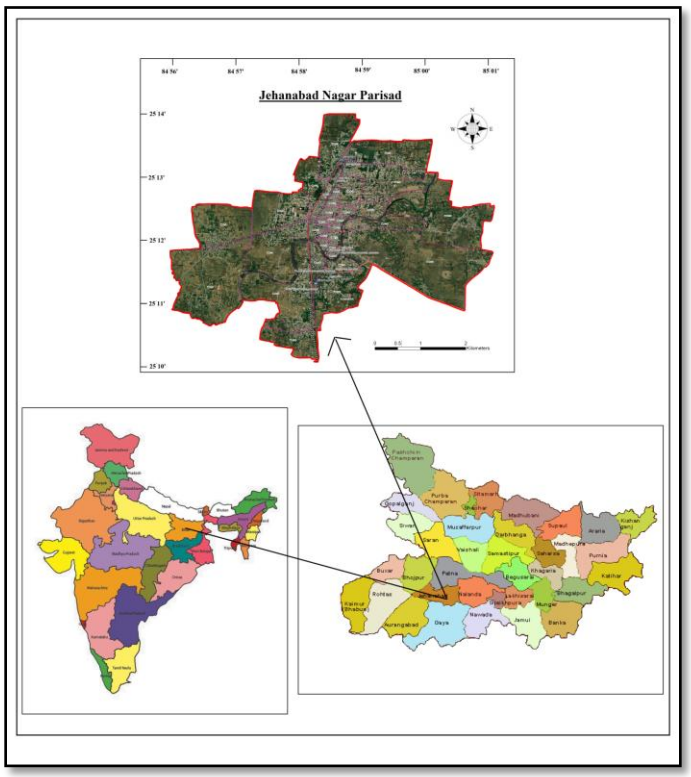

चित्र – 1.1

जहानाबाद नगर की नगरीय समस्या

जहानाबाद नगर में भी और नगरों की तरह नगरीकरण के कारण नगरों में ऐसो समस्या जन्म हो गई है जिससे किन्ही न किन्ही रूपों में नगरीय जीवन को प्रभावित करने लगा है। जहानाबाद नगर में समस्याओं का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण नगरों में क्षमता से अधिक जनसंख्या का सकेंद्रण है। नगरों की बढ़ती विशालता और घटती नगरीय जीवन की गुणवत्ता के कारण अब विद्वानों को सोचने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है कि इस प्रवृत्ति को कैसे नियंत्रित किया जाए ताकि बढ़ती नगर की इस समस्याओं को कम किया जा सके। इसी को लक्ष्य मानकर शिंदमान ने आदर्श नगर आकार के संबंध में सोचने के लिए प्रस्ताव रखा है। इन के प्रस्ताव को अनेक भूगोलविदो, समाजशास्त्रीयों, नगर नियोजको और नगर के प्रति अभिरुचि रखने वाले विद्वानों का समर्थन मिला है। नगरों के आदर्श आकार की अवधारणा नगरीकरण के बढ़ते प्रभाव और उससे उत्पन्न अगर यह समस्याओं से जुड़ी विचारधारा है। नगरीकरण के बढ़ते प्रभाव और उससे उत्पन्न नगर यह समस्याओं से जुड़ी विचारधारा है। सामान्यतः नगरों की धारण क्षमता से अधिक जनसंख्या संकेंद्रण की दशा में आवासीय गमनागमन, कार्य संपादन और नागरिक सेवाओं की दशा चिंतनीय हो जाती है। यह सर्वमान्य धारणा है कि नगरीय जीवन उत्कृष्ट मूल्यों पर आधारित जीवन पद्धति होतो है जबकि वर्तमान समय में विविध समस्याओं के कारण उसमें क्षरण होने लगता है। पहले भारत के महानगरों में ही एक तिहाई जनसंख्या गंदी बस्ती में निवास करने के लिए बाध्य होती थी जहां न्यूनतम नागरिक सुधारें उपलब्ध नहीं होती थी। जनसंख्या से बोझिल नगरो की समस्याएं विकराल रुप लेती जा रही थी क्योंकि संसाधनों के अभाव में कोई कारगर सफलता नहीं मिल रही थी। लेकिन अब जहानाबाद जैसे छोटे नगर में भी इस तरह की समस्याएं आम हो गई है और छोटे नगरां में भी स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि लोगों के जीवन की श्रेष्ठता बनाए रखना असंभव सा लगने लगा है। जहानाबाद नगर में समस्याओं का पुंज बन गया है जिसे नीचे दर्शाया गया है।

जहानाबाद नगर का वर्ष 1951 से 2011 के बीच का जनसंख्या वृद्धि

वर्ष	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
जनसंख्या	12445	23209	29148	44635	52332	81503	103202
% वृद्धि	0	86.49	25.59	53.13	17.24	55.74	26.62

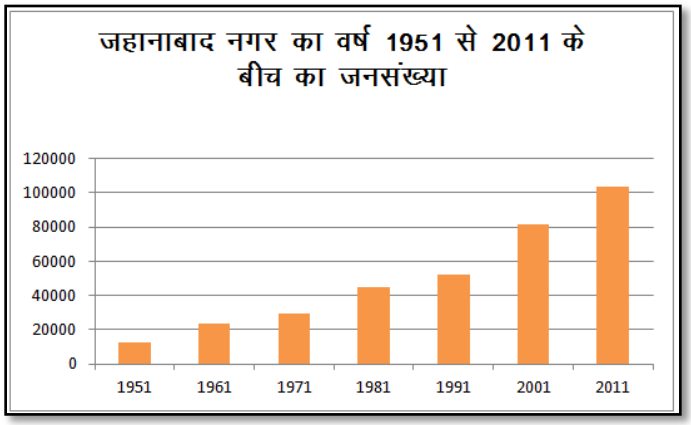

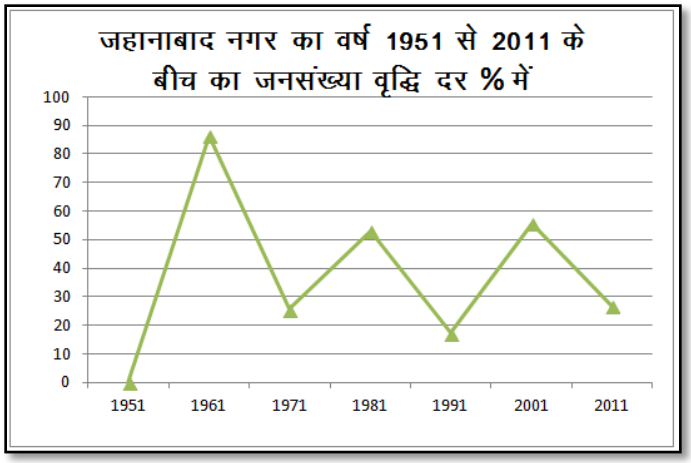

स्वास्थ्य समस्याएं और नगरीकरण:

तेजी से नगरीकरण और बढ़ती शहरी आबादी को स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान की दिशा में बड़ी चुनौतियों के रूप में देखा गया है। यह अनुमान है कि 1990 और 2025 के बीच विकासशील देशों में शहरी आबादी तीन गुना बढ़ गई होगी और यह कुल आबादी का 61 प्रतिशत हो जाएगा। इस बढ़ती शहरी आबादी के मद्देनजर स्वास्थ्य संबंधी कई चुनौतियां जैसे पानी, पर्यावरण, हिंसा और चोट, गैर – संचारी रोगों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, तंबाकू के उपयोग, अस्वास्थ्यकर आहार, शारीरिक निष्क्रियता और महामारी के प्रकोप से जुड़े जोखिम और खतरे कम चुनौतीपूर्ण नहीं हैं।

पर्यावरणीय चुनौती:

पर्यावरण संरक्षण के मद्देनजर शहर एक बड़ी चुनौती बनते जा रहे ह क्योंकि शहर के विकास के लिए हरित क्षेत्र की बलि दी जा रही है। जलवायु परिवर्तन ने कई शहरों के अस्तित्व को चुनौती दी है , खासकर दरधा नदी के तटीय शहर अब मानव निर्मित आपदाओं से अछूते नहीं हैं। इसके अलावा , तेजी से तकनीकी विकास शहरों में कई पारंपरिक व्यापारिक समूहों के लिए खतरा बन जाता है क्योंकि यह पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचाता है।

शहरों में बढ़तो झुग्गी बस्तियाँ :

जहानाबाद नगर में में बड़ी संख्या में झुग्गी बस्तियों का गठन किया गया है। उनमें रहने वाले लोग शहरी आबादी से संबंधित उच्च और मध्यम वर्ग की कई जरूरतों को पूरा करते हैं , लेकिन वे न केवल गरीबी के शिकार हैं , बल्कि बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित हैं।

यातायात की समस्या:

जहानाबाद नगर में बेतरतीब यातायात एक गंभीर समस्या बन गई है क्योंकि सार्वजनिक परिवहन सेवाएं लगभग समाप्त हो गई हैं। शहर में रहने

वाले अमीर लोग अपनी शक्ति आर समृद्धि का प्रदर्शन करने के लिए यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं और इससे बड़ी संख्या में सड़क दुर्घटनाएं होती हैं।

कुछ अन्य समस्याएं : –

जहानाबाद नगर में सार्वजनिक स्वास्थ्य गुणवतापूर्ण सेवाओं से वंचित है। निजीकरण और स्वास्थ्य सेवाओं के व्यावसायीकरण ने शहरों में असमानता पैदा कर दी है। शहरों की सड़कों पर गड्ढे , सीवर प्रणाली की कमी और जल भराव , बिजली , पानी और संचार सुविधाओं के अव्यवस्थित रूप के कारण समस्याएं शहरी जीवन को इतना अधिक समस्याग्रस्त बना देती हैं कि मात्र शहरों में जाने के बारे में सोचा जाना दूभर हो जाता है। कंक्रीट के मकानों में रहने वाले लोग अपने पड़ोसी को भी नहीं जानते हैं। भावनात्मकता , संचार की खाई और विषयगतता शहरी आबादो के जीवन का हिस्सा बन गई है।

नवउदारवाद और वैश्वीकरण के बाद , गाँव अब केवल खाद्य , श्रम और कच्चे उत्पादों के आपूर्तिकर्ता बन गए हैं। शहर आधुनिकीकरण और उपभोक्तावादी सभ्यता को दर्शाते हैं और अधिकांश गांव अपने अस्तित्व के लिए इन शहरों से जुड़े हुए हैं। शहरीकरण , औद्योगीकरण , सामाजिक गतिशीलता और प्रवासन की प्रक्रिया में वृद्धि हुई है और एक नई पीढ़ी ने गांवों से शहरों की ओर पलायन करना शुरू कर दिया है।

निष्कर्ष:

इस तरह हम देखत हैं कि भारत में बढ़ते शहरीकरण के कारण कई समस्याएं पैदा हुई हैं। इन समस्याओं के पीछे मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या है। भारतीय शहरों में पुरानी परंपरा के अनुसार, परिवारों के लिए रहना बहुत मुश्किल है क्योंकि आधुनिक समय में तेजी से और मूलभूत परिवर्तन हो रहे हैं। पुरानी परंपरा कृषि समाज के अनुसार है। शहरी परंपरा और ग्रामीण परंपरा में इसका तीव्र विरोध है। यह स्वाभाविक है कि प्रौद्योगिकी और शहरी समाजों में, नए प्रतिमान विकसित होंगे। कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन सी संस्था, संगठन का मुख्य उद्देश्य मानवीय जरूरतों को पूरा करना है। वे संस्थान जो किसी भी समय मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ है। शहरों के विकास के लिए, सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में कई रोजगार के अवसर पैदा किए हैं – जैसे नेहरू रोजगार योजना, ट्रिसम, आरएलईजीपी आदि प्रदान किए गए हैं। इसके साथ ही शहरी बाहरी इलाकों में विकास पोल केंद्र स्थापित करना होगा। शहरी क्षेत्रों में स्थित औद्योगिक प्रतिष्ठानों को भी बाहरी क्षेत्रों में स्थानांतरित किया जाना चाहिए। इससे शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का दबाव कम होगा और प्रदूषण के स्तर में काफी कमी आएगी। इन उपायों को सफलतापूर्वक लागू करने से ही हम इन समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं।

REFERENCES

1. अधिवास भूगोल, डॉ रामयज्ञ सिंह, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश

2. सांस्कृतिक भूगोल, डॉ गायत्री प्रसाद, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश

3. नगरीय भूगोल, डॉ सुरेश चन्द्र बंसल, मिनाक्षी पब्लिकेशन, नई दिल्ली

4. भारत में नगरीय समाज, रिया खत्री, कैलाश पुस्तक भवन, भोपाल, मध्यप्रदेश

5. सामाजिक भूगोल, डॉ एस. डी. मौर्य, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश

6. नगरीय समाज शास्त्र, डॉ. वी एन सिंह, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, नई दिल्ली

7. G- S- Mohanty [Social and Cultural Geography] New Delhi

8. जनसँख्या भूगोल, डॉ चतुर्भुज मामोरिया, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, उत्तरप्रदेश